Volume-08
Issue-07
July-2021

ISSN: 2349-7637 (Online)
RESEARCH HUB International Multidisciplinary Research Journal
https://rhimrj.co.in/ [Peer-Reviewed Journal]

ग्रामीण समाज में अनुसूचित जाति की महिलाओं पर आधुनिकीकरण का प्रभाव

योगेश मैनाली

शोधार्थी, समाजशास्त्र विभाग, राजकीय महाविद्यालय, रामनगर, कुमाऊँ विश्वविद्यालय, नैनीताल, उत्तराखण्ड

ARTICLE DETAILS

Article History
Published Online: 5 July 2021

Keywords
सामाजिक–सांस्कृतिक, सामाजिक–धार्मिक, सामाजिक– राजनैतिक

***Corresponding Author**
Email: *yogesh928@gmail.com*

ABSTRACT

ग्रामीण समाज के मूल्यों तथा जीवन शैली में आधुनिकीकरण के मूल्य व प्रवृतियाँ अपनी जगह बना रहे हैं। जहाँ पहले ग्रामीण समुदाय में आध्यात्मवाद, धर्म, ईश्वर तथा नैतिकता का परम स्थान होता था, वही आज इन मूल्यों पर आधुनिकीकरण के मूल्य जैसे बाह्य आडम्बर, कृत्रिमता ने अपनी छाप छोड़ दी है। ग्रामीण समाज में लोगों की जीवन शैली, सामाजिक नियंत्रण तथा जीवन मूल्यों को कभी धर्म नियंत्रित करता था, वहीं आज सामाजिक नियंत्रण की जिम्मेदारी कानून व्यवस्था ने ले ली है। ग्रामीण सामाजिक जीवन पर आधुनिकीकरण का व्यापक प्रभाव पड़ा है, जिसका प्रभाव ग्रामीण समाज के लोगों के खानपान, रहन–सहन तथा उनकी जीवन शैली में स्पष्ट दिखाई देता है। ग्रामीण समाज की सामाजिक संरचना के अंतर्गत ग्रामीण मूल्यों तथा जीवन शैली में आधुनिकीकरण की प्रवृतियाँ स्पष्ट दृष्टिगोचर दिखाई देती हैं। आधुनिकीकरण ने ग्रामीण समाज के परिवार, विवाह, जीवन शैली परंपराओं तथा रीति–रिवाजों को प्रभावित कर ग्रामीण समाज का एक नया ढाँचा प्रस्तुत किया है। आधुनिकीकरण की प्रक्रियाओं का ही नतीजा है कि ग्रामीण समाज में अनुसूचित जाति की महिलाओं की सामाजिक, आर्थिक, शैक्षणिक तथा राजनैतिक प्रस्थिति में सकारात्मक प्रभाव दृष्टिगोचर होते दिखाई देते हैं। आधुनिकीकरण के प्रभाव का ही परिणाम है कि ग्रामीण समाज में सदियों से चले आ रहे अंधविश्वास, धर्मान्धता, भाग्यवादिता तथा रूढ़िवादिता का प्रभाव कम होता दिखाई दे रहा है। आज ग्रामीण समुदाय विकास के पथ का अनुसरण कर विकास की दिशा को सकारात्मक गति दे रहा है। आधुनिकीकरण का प्रभाव ग्रामीण समाज की अनुसूचित जाति की महिलाओं पर भी बहुत अधिक दिखाई दे रहा हैं, जहाँ वे शिक्षित व जागरूक होकर अपने अधिकारों के प्रति सजग हो रही हैं। वहीं दूसरी ओर उन्हें रोजगार व स्वरोजगार के नये–नये अवसर उपलब्ध हो रहे हैं। इनसे वे आर्थिक व सामाजिक रूप से सशक्त हो रही हैं। अधुनिकीकरण की प्रक्रिया से ग्रामीण समाज में सामाजिक प्रतिमानों तथा जातिगत भेदभावों की प्रबलता में आई कमी से ग्रामीण समाज की अनुसूचित जाति की महिलाओं को सम्मानजनक सामाजिक स्तर प्राप्त हो रहा है। ग्रामीण समाज में ऐसा शायद ही कोई गांव होगा, जो आधुनिकीकरण के प्रभाव से अछूता रहा हो। धार्मिक अंधविश्वासों, परंपराओं व रूढियों के पालन करने के गढ़ के रूप में पहचाने जाने वाले ग्रामीण समाज में आधुनिकीकरण की प्रवृतियों के प्रभाव से सामाजिक– आर्थिक, सामाजिक–सांस्कृतिक, सामाजिक–धार्मिक, सामाजिक– राजनैतिक तथा सामाजिक–शैक्षणिक परिवर्तन ग्रामीण समाज में आज स्पष्टतः परिलक्षित हो रहे हैं।

प्रस्तावना–

आधुनिकीकरण विकास की एक सतत् प्रक्रिया है। आधुनिकीकरण के माध्यम से व्यक्ति के सामाजिक जीवन में आधुनिकता का प्रतिपादन होता है। आधुनिकीकरण का प्रत्यय सम्बन्ध 'आधुनिकता से है।'[1] आधुनिकीकरण की अवधारणा नवीन है। आधुनिकीकरण शब्द का प्रयोग सर्वप्रथम पश्चिमी समाजों में हुआ। आधुनिकीकरण परिवर्तन की एक प्रक्रिया है, जो परम्परा से वांछित प्रकार की प्रविधि की ओर उन्मुख होती है। आधुनिकीकरण का सामाजिक संरचना, मूल्य उन्मेष, प्रेरणा एवं प्रतिमान से सम्बन्ध होता है। **श्रीनिवास**[2] ने अपनी पुस्तक **'सोशियल चेंज इन मॉडर्न इंडिया'** में आधुनिकीकरण को पश्चिमी मॉडल के आधार पर परिभाषित करते हुए कहा है कि 'आधुनिकीकरण किसी पश्चिमी देश के प्रत्यक्ष या परोक्ष सम्पर्क के कारण किसी गैर–पश्चिमी देश में होने वाले परिवर्तनों के लिए प्रचलित शब्द है।'

प्रो0 आइजन्स्टीड[3] ने अपनी पुस्तक **'मॉडर्नाइजेशन प्रोटेस्ट एण्ड चेंज'** में बताया कि 'ऐतिहासिक रूप से आधुनिकीकरण परिवर्तन की एक ऐसी प्रक्रिया है जो पश्चिमी यूरोप में सामाजिक, आर्थिक और राजनैतिक व्यवस्था की ओर उन्मुख है।' इस प्रकार आधुनिकीकरण एक जटिल प्रक्रिया है, जिसमें उन सभी परिवर्तनों को सम्मिलित किया जा सकता है, जो मनुष्य के जीवन के आर्थिक, सामाजिक, राजनैतिक, सांस्कृतिक वैचारिकी एवं धार्मिक पक्षों से सम्बद्ध होती है।

विभिन्न समाजशास्त्रियों ने आधुनिकीकरण के विभिन्न सूचक बताये हैं। **डेनियल लर्नर**[4] ने गतिशीलता, साक्षरता एवं संचार सहभागिता आदि को आधुनिकता का सूचक बताया है। अतः ग्रामीण क्षेत्रों में अनुसूचित जाति की महिलाओं में जो परिवर्तन हो रहे हैं, निःसन्देह उससे इस आधुनिकीकरण की

प्रक्रिया का गहरा व घनिष्ठ सम्बन्ध है, जिससे सामाजिक, आर्थिक, राजनैतिक, धार्मिक परिस्थितियाँ यहाँ तक कि प्रथाएं, परम्पराएं तथा सामाजिक संरचना परिवर्तन की प्रक्रिया के दौर से गुजर रहे हैं। ग्रामीण क्षेत्र की अनुसूचित जाति की महिलाओं में सामाजिक परिवर्तन के कारक के रूप में आधुनिकीकरण का अनुसूचित जाति की महिलाओं पर प्रभाव के सम्बन्ध में शोधार्थी द्वारा अध्ययन कर वस्तुस्थिति जानने का एक लघु प्रयास किया गया है।

ग्रामीण क्षेत्र की अनुसूचित जाति की महिलाओं में गतिशीलता की गति पहले से बढ़ गयी है। अनुसूचित जाति की महिलाएं चली आ रही जाति व्यवस्था व धर्म सम्बन्धी अनेक अन्धविश्वासों व रूढ़ियों से सचेत होते जा रही हैं। आधुनिकीकरण के कारण ग्रामीण क्षेत्र की अनुसूचित जाति की महिलाओं की भूमिकाओं एवं प्रस्थिति में परिवर्तन हुए हैं और निरन्तर परिवर्तन हो रहे हैं। प्रत्येक समाज का एक निश्चित सामाजिक संगठन होता है। यह सामाजिक संगठन सदस्यों के पदों का निर्धारण करता है। आधुनिकीकरण की प्रक्रिया के कारण आज ग्रामीण समाज में परम्परागत् सामाजिक संगठन समाप्त हो गये हैं। इन समाजों में अर्जित प्रस्थिति को अधिक महत्व दिया जाता है। ग्रामीण क्षेत्र की अनुसूचित जाति की महिलाएं अब घरों से बाहर निकलकर नौकरी, व्यवसाय एवं स्वरोजगार करने लगी हैं। आज अनुसूचित जाति की महिलाएं अपने परिवारों में दासी बनकर नहीं वरन् अपने परिवारों में मालिक व मित्र बनकर रह रही हैं। ग्रामीण क्षेत्रों में धार्मिक संस्कारों एवं रीति–रिवाजों पर आधुनिकीकरण के प्रभावों से गतिशीलता आई है। ग्रामीण अनुसूचित जाति की महिलाओं का धार्मिक संस्कारों एवं रीति–रिवाजों को मानने के दृष्टिकोण में आज बहुत परिवर्तन आया है। आधुनिकीकरण से पड़ने वाले प्रभावों का ही परिणाम है कि महिलाओं का धार्मिक संस्कारों एवं रीति– रिवाजों के प्रति विश्वास कम होता जा रहा है। ग्रामीण महिलाओं का अब विज्ञान एवं प्रौद्योगिकी की ओर झुकाव बढ़ रहा है। वर्तमान समय में ग्रामीण क्षेत्र की अनुसूचित जाति के परिवारों में प्राचीन रूढ़ियाँ एवं परम्पराएं टूट रही हैं और धार्मिक संस्कार एवं रीति–रिवाजों के प्रति उनका मोह भंग हो रहा है। ग्रामीण अनुसूचित जाति की महिलाएं तार्किकता के द्वारा चले आ रहे परम्परागत् संस्कारों व रीति–रिवाजों से अब दूर हट रही हैं।

ग्रामीण समाजों में धर्म के नाम पर आज भी लोगों में आस्था तथा अंधविश्वास देखने को मिलता है। ग्रामीण महिलाएं अपनी जीवन में इन अंधविश्वासों के प्रति श्रद्धा एवं विश्वास रखती हैं **विलियम क्रुक[5]** ने अपनी पुस्तक **'पोपुलर रिलिजन एण्ड फौक्लोर ऑफ नादर्न इंडिया'** में धार्मिक अंधविश्वासों के सम्बन्ध में बताया है कि ग्रामीण समुदाय भय भावना से अधिक प्रभावित होते हैं। वे दिखाई न देने वाली शक्तियों को प्रसन्न एवं संतुष्ट करना चाहते हैं। उनका धर्म प्रमुख रूप से श्रद्धा तथा भय पर आधारित होता है। श्रद्धा तथा भक्ति के लिए वे देवी–देवताओं तथा पवित्र वस्तुओं की पूजा करते हैं। भय तथा हानि से बचने के लिए अंधविश्वासों में आस्था रखते हैं। आधुनिकीकरण किसी भी समाज में तर्कपूर्ण वैचारिक शक्ति को जन्म देता है, जिसके परिणामस्वरूप नई विचारधाराएं, तकनीकी, प्रौद्योगिकी का विकास होता है। ये विचारधाराएं सामाजिक, आर्थिक, शैक्षणिक तथा राजनैतिक जागरूकता से सम्बन्धित होती है। ग्रामीण क्षेत्र की अनुसूचित जाति महिलाओं में समाचार–पत्र, इंटरनेट, पुस्तकें, रेडियो, टेलीविजन, सोशियल मीडिया से सामाजिक, आर्थिक एवं राजनैतिक क्षेत्रों में जनजागरूकता बढ़ी है।

आज ग्रामीण क्षेत्र की अनुसूचित जाति की महिलाएं शिक्षा की महत्ता को भलीभाँति समझ गई हैं। ग्रामीण क्षेत्र की अनुसूचित जाति की महिलाएं सामाजिक, आर्थिक, राजनैतिक, संवैधानिक एवं सामाजिक विधानों के प्रति जागरूक होकर अपने अधिकारों के प्रति सजग हो गई हैं। परम्परा विचारों, कार्यप्रणालियों एवं निर्णयों की संरचना है, जो प्राचीन वस्तुओं से अपना घनिष्ठ सम्बन्ध रखती है और जिसे आसानी से अलग नहीं किया जा सकता है। परम्परा सामाजिक समूह की संरचना में योगदान देती है। इसके द्वारा सामूहिक चेतना का विकास होता है। **प्रो0 एस.सी. दुबे[6]** ने आधुनिकीकरण को परिवर्तन की एक प्रक्रिया बताया है, जो परम्परा से वांछित प्रकार की प्रविधि की ओर उन्मुख होती है, जिसका सामाजिक संरचना, मूल्य, उन्मेष, प्रेरणा एवं प्रतिमान से सम्बन्ध होता है। अतः आधुनिकीकरण केवल एक परिवर्तन की प्रक्रिया ही नहीं, अपितु एक विशिष्ट प्रकार के मूल्यों की व्यवस्था भी है। आधुनिकता के अंतर्गत विकास, ओद्यौगिकीकरण, नगरीकरण, गतिशीलता, तार्किकता एवं प्रोद्यौगिकी का विकास आते हैं। ग्रामीण क्षेत्र की अनुसूचित जाति की महिलाओं पर आधुनिकीकरण के प्रभावों के कारण उनका परम्पराओं में से विश्वास टूट रहा है। वे प्रत्येक काम को परम्पराओं के आधार पर न करके तार्किकता के आधार पर कर रही हैं। आधुनिकीकरण के परिणामस्वरूप आज ग्रामीण क्षेत्र की अनुसूचित जाति की महिलाओं की जीवन शैली, रहन–सहन, खानपान, व्यवहार प्रतिमान एवम् आचार–विचार आदि के विभिन्न पहलुओं पर परिवर्तन का प्रभाव पड़ा है।

ग्रामीण समाज में आधुनिकीकरण के परिणामस्वरूप प्राचीनकाल से चली आ रही सामाजिक कूरूतियाँ जैसे– जातिप्रथा, खानपान सम्बन्धी प्रतिबन्ध, व्यवसायिक प्रतिबन्ध, छुआछूत एवं अन्य रूढ़ियाँ जो व्यक्ति के विकास में बाधक हैं, समाप्त हो गयी हैं।

निष्कर्ष–

आज शिक्षा के प्रचार–प्रसार तथा आधुनिकीकरण के प्रभाव से ग्रामीण समाज भी अछूता नहीं हैं। नगरीकरण, आधुनिकीकरण तथा पश्चिमीकरण के कारकों ने ग्रामीण समाज की पारिवारिक संरचना में संयुक्त परिवार को विघटित करने में

भी अपना अमूल्य योगदान दिया है, जिससे ग्रामीण समाजों में संयुक्त परिवार की सामूहिकता व्यक्तिवादी स्वार्थों के कारण समाप्त हो रही है। आधुनिकीकरण के बदलते परिवेशों ने परिवार रूपी मौलिक संस्था के अंतःसंबंधों को भी परिवर्तित कर किया है। आधुनिकीकरण से ग्रामीण समाज की आर्थिक गतिशीलता में वृद्धि होने से ग्रामीण समाज की अनुसूचित जाति की महिलाओं का आर्थिक परिवेश भी मजबूत हो रहा है और उनकी सामाजिक संबंधों की परिधि विस्तृत होती जा रही है। आधुनिकीकरण के प्रभाव के कारण ग्रामीण समाज में प्रत्येक वर्ग की महिलाओं पर इसका व्यापक प्रभाव दिखाई दे रहा है। आधुनिकीकरण के प्रभाव का ही परिणाम है कि ग्रामीण समाज में शिक्षा, नौकरी, व्यवसाय तथा स्वरोजगार आदि समाज के हर क्षेत्र में अनुसूचित जाति की महिलाओं की भागीदारी तथा सहभागिता में निरन्तर वृद्धि हुई है।

संदर्भ ग्रन्थ सूची–

1 गांगुली, एस.एन. (1977), 'ट्रेडिशन माडर्निटी एण्ड डेवलपमेंट', मेकमिलन, प्रा0लि0, नई दिल्ली।
2 श्रीनिवास, एम.एन. (1956), 'सोशियल चेंज इन माडन्र इंडिया', एलाइड पब्लिशर्स, बॉम्बे।
3 आइजन्स्टीड, एस.एन. (1961), 'मॉडर्नाइजेशन : प्रोटेस्ट एण्ड चेंज', प्रिन्टिस हॉल।
4 लर्नर, डेनियल (1968), 'मॉडर्नाइजेशन : सोशियल असपैक्ट्स', उद्धृत डेविड सिल्स, इंटरनेशनल इनसाइक्लोपीडिया ऑफ सोशियल साइनसेज, वाल्यूम–10
5 क्रुक, विलियम (1962), 'पॉपुलर रिलिजन एण्ड फॉकलौर ऑफ नॉदर्न इंडिया', हारपर एण्ड संस पब्लिकेशंस।